IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सूरदास का वात्सल्य वर्णन

विनोद कुमार

स्नातकोतर हिन्दी, शिक्षा स्नातकोतर,

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा

प्रस्तावना-

सूरदास जी के काव्य की सर्वोपरि विशेषता उसका वात्सल्य वर्णन है। हिंदी ही नहीं अन्य भाषाओं में भी ऐसा सरस स्वाभाविक तथा सर्वांगीण वात्सल्य वर्णन दुर्लभ है। आचार्य शुक्ल के अनुसार "सूर वात्सल्य का कोना कोना झांक आए थे। जिस क्षेत्र को सूर ने चुना है, उस पर उनका अधिकार अपरिमित है, उसके वे सम्राट हैं।" सूरदास जी वास्तव में वात्सल्य रस के अधिपति हैं। अतः इस शोध के द्वारा सूरदास जी के वात्सल्य वर्णन को दर्शाने की कोशिश की गई है।

प्रमुख शब्दः-सूरदास, नंद, यशोदा, वात्सल्य

सूरकाव्य में वात्सल्यः-

डॉक्टर श्रीनिवास शर्मा के अनुसार सूरसागर में 580 पद वात्सल्य वर्णन से संबंधित है अर्थात सूरदास जी ने वात्सल्य वर्णन प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

वात्सल्य के पदों का वर्गीकरणः-

डॉक्टर श्रीनिवास जी के अनुसार वात्सल्य वर्णन के पदों का वर्णन इस प्रकार है-

पुत्र जन्म के आनंदोल्लास का वर्णन -44 पद

विभिन्न संस्कारों के अवसर पर सुख अनुभूति -10 पद

बाल छवि वर्णन -35 पद

बाल स्वभाव वर्णन -49 पद

बाल क्रीड़ा तथा चेष्टाएं -79 पद

उपालंभ- 82 पद

मात्रहृदय - 192 पद

वियोग वात्सल्य- 89 पद

सूरदास जी के वात्सल्य वर्णन को संयोग वात्सल्य और विभोग वात्सल्य दो भागों में बांट कर अध्ययन किया जाता है।

(क) संयोग वात्सल्य:-

सूरदास जी के संयोग वात्सल्य को भी मुख्यतः पांच उप भागों में बांटा जाता है:-

1 . कृष्ण के जन्मोत्सव, संस्कार, समारोह आदि का वर्णन:-

सूरदास जी ने श्री कृष्ण के जन्म उत्सव से ही वात्सल्य का वर्णन आरंभ किया है। श्री कृष्ण जी के जन्म का उत्सव ब्रज में सब जगह मनाया जा रहा है। सभी गोप व गोपियां नंद के द्वार पर उत्सुकता से खड़े हैं । स्त्रियां बधाई गीत गा रही हैं। भाट विरुदावली गान कर रहे हैं। डाडी व डाडीन नृत्य कर रहे हैं। दान दिया जा रहा है। देवी देवताओं की पूजा की जा रही है। सूरदास जी ने श्री कृष्ण जी के जन्मोत्सव के साथ-साथ अन्य उत्सवों के संस्कारों का भी वर्णन किया है। बालक के कनछेदन, नामकरण आदि के अवसर पर माता पिता के हृदय में जो सहज उत्साह व प्रेम उमड़ने लगता है उसे सूरदास जी ने नंद व यशोदा के माध्यम से दर्शाया है।

2. श्री कृष्ण जी की बाल छवि, वेशभूषा आदि का वर्णन :-

सूरदास जी ने श्री कृष्ण की बाल छवि को अनुपम व अद्वितीय बताया है। श्री कृष्ण के सुंदर रूप को देखकर 'अमर मुनिगन' भी हैरान रह जाते हैं। निम्न पंक्तियों में सूरदास जी ने श्री कृष्ण जी की बाल छवि का कितना मार्मिक और मनोहारी वर्णन किया है -

"हरि जू की बालछवी कहो बरनि।

सकल सुख की सींव कोटि मनोज शोभा हरनि"

3. कृष्ण के बाल चेष्टाओं, क्रीड़ाओं आदि का वर्णन:-

श्री कृष्ण की बालोचित भांगिमाओ और चेष्टाओं का स्वाभाविक अंकन करने में सूरदास जी अप्रतिम है। श्री कृष्ण शैशव से ही चपल-चंचल है, इसीलिए उनकी लीलाएं अत्यंत रम्य बंद पड़ी हैं। यशोदा माता कान्हा को पालने में झूलाते हुए दुलार करती है, लोरी गाती है ताकि वह सो जाए।

4 . कृष्ण के स्वभाव, मनोभाव आदि का वर्णन:-

श्री गोविंद शर्मा ने लिखा है कि सूरदास जी बाल मनोविज्ञान के अच्छे पारखी थे। उन्होंने कान्हा के स्वभाव को बडी सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। वे चपल, चंचल तो है ही, बातें बनाने में भी बडे प्रवीण है। जब 'दधिचोरी' के प्रसंग में गोपियां यशोदा माता से उनकी शिकायत करती हैं तो श्री कृष्ण अपनी सफाई में जो बहाने बनाते हैं, वे उनकी वाक़ पटुता के परिचायक हैं।

5. श्री कृष्ण के गोदोहन व गोचारन का वर्णन:-

सूरदास जी ने कृष्ण की सामान्य क्रीड़ाओं, लीलाओं, मनोभावों आदि का वर्णन तो किया ही है इसके साथ- साथ उन्होंने श्री कृष्ण के गोदोहन व गोचारण संबंधी घटनाओं का भी वर्णन किया है। एक दिन कान्हा वालों को दूध दोहता देख स्वयं दूध दोहना सीखना चाहता है। वह नंद बाबा से सीखाने के लिए कहता है। नंद बाबा कान्हा की बातें सुनकर हंस पड़ते हैं।

(ख) वियोग वात्सल्य:-

सूरदास जी के वियोग वात्सल्य को मुख्यतः तीन उप भागों में बांटा जाता है।

1. **गच्छ प्रवास :-**

जब कंस ने श्रीकृष्ण और बलराम को मथुरा बुलाने के लिए अक्रूर को गोकुल भेजा । तब उसके आने के गंतव्य को जानकर यशोदा माता का मुख् निस्तेज तथा मानस व्यग्र हो जाता है। उसे ऐसा लगता है, मानो अक्रूर के रूप में काल उसके घर चला आया हो। जो यशोदा माता अपना दिन कान्हा को निहारते हुए व्यतीत करती है तथा रात भर उसे अपनी गोद में बैठा कर ऐसी स्थिति में वह भला कान्हा को अपनी आंखों से ओझल कैसे कर सकती है।

2. **प्रवास से लौटते हुए :-**

जब कृष्ण और बलराम को मथुरा छोड़ने गए नंद बाबा गोकुल वापस लौटते हैं। तब यशोदा माता बार-बार मथुरा की ओर प्रतीक्षारत नेत्रों से निहारती रहती है। यशोदा माता को पूरा विश्वास है कि नंद बाबा कृष्ण और बलराम को लौटा लाएंगे। लेकिन नंद बाबा बिना पुत्रों के ही मथुरा से लौट आए। यशोदा माता की आज टूट गई।

3. **प्रवास : –**

श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद तो नंद बाबा वे यशोदा माता की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। उनके जीवन में उदासी व अकेलापन हावी हो गया। जीवन के सभी सुख साथ छोड़ गए। दोनों अत्यंत व्याकुल रहने लगे।

निष्कर्ष : –

निष्कर्ष तौर पर कह सकते हैं कि सूरदास जी का वात्सल्य वर्णन अत्यंत सरस, स्वाभाविक एवं सर्वांगीण है। सूरदास जी ने जहां एक और श्री कृष्ण की बालछवि, वेशभूषा, बाल चेष्टाओं, क्रीडाओं आदि का वर्णन किया है। वहीं उन्होंने दूसरी ओर श्री कृष्ण के स्वभाव, मनोभाव आदि का भी सुंदर चित्रण किया है।

संदर्भ:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास-स्नातकोत्तर हिंदी पूर्वार्ध
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता स्नातकोतर हिंदी उतरार्ध
3. सूरसागर-सार-स्नातकोत्तर हिंदी उतरार्ध
4. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा